डॉ. स्वराक्षी स्वरा

खगड़िया, बिहार

१

तूफानों में दीप जला कर मानेंगे
सोये मन में आस जगा कर मानेंगे॥

आए जाए लाख बहारें क्या मतलब
हम पतझड़ में फूल खिला कर मानेंगे ॥

भूले भटके हर इंसानी रिश्तों को
रिश्तों की पहचान करा कर मानेंगे॥

चाम हमारी सुनने वालों दो ताली
हम महफ़िल की शान बढ़ा कर मानेंगे॥

आन पे अपनी हम जब भी आ जायेंगे
तो पत्थर पे दूब उगा कर मानेंगे॥

वक्त ए रुखसत स्वरा मेरी जब आएगी
हर आंखों से अश्क बहा कर मानेंगे॥

२

मुझे ऐसा कोई हुनर चाहिए
फ़लक से जमीं तक असर चाहिए ॥

बिना डरके कह दूं,मैं बातें सभी
मुझे इस तरह का जिगर चाहिए ॥

मेरा साथ दे वे जो हर हाल में
मुझे ऐसा ही हम सफ़र चाहिए ॥

नहीं खार से हो कोई वास्ता
सजी फूल से बस डगर चाहिए॥

बिना बोले समझे मेरी बात को
मोहब्बत भरी वो नजर चाहिए ॥

रहें प्यार से मिलके अपने जहाँ
मुझे ऐसा ही एक घर चाहिए ॥

मुझे मेरी मंजिल पे पहुंचा भी दे
सफ़र में वो सीधी डगर चाहिए॥